राज एक्सप्रेस, भोपाल
01 MAY 2017

आदि शंकराचार्य ने मप्र की भूमि से दिया सांस्कृतिक एकता का संदेश

शिवराजसिंह चौहान

उदया तिथि के अनुसार 1 मई 2017 को आदि शंकराचार्य की प्राकटय पंचमी को हम पूरे प्रदेश में आचार्य शंकर प्रकटोत्सव के रूप में मना रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी आदि शंकराचार्य के प्रकटोत्सव को राष्ट्रीय दर्शन दिवस के रूप में घोषित किया है। अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रवर्तक, सनातन धर्म के पुर्नरुद्धारक एवं सांस्कृतिक एकता के देवदूत आदि शंकराचार्य का पावन स्मरण हम सांस्कृतिक एकता स्वरूप में कर रहे हैं। इस अवसर पर पूरे प्रदेश में सभी संभाग, जिला, विकासखंड और ग्राम पंचायत स्तर पर विभिन्न विभागों के समन्वय से संगोष्ठियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

आज से लगभग 1200 वर्ष पूर्व यानि 792 ईस्वी में आदि शंकराचार्य मप्र में नर्मदा तट पर ज्ञान प्राप्ति के लिए आये थे। उन्होंने ओंकारेश्वर के पास गोविन्द पादाचार्य से ज्ञान प्राप्त किया। इस घटना से बहुत कम लोग परिचित हैं। हम इसको एक चमत्कार के रूप में देखते हैं। मप्र को इस पर गर्व है कि आदि शंकराचार्य मप्र की धरती पर 1200 वर्ष पहले एक चमत्कार के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने ही नर्मदाष्टक लिखकर माँ नर्मदा के महत्व को स्थापित किया। एक बार जब माँ नर्मदा की भीषण बाढ़ से लोग आतंकित हो गए तो उन्होंने नर्मदाष्टक लिखकर माँ नर्मदा से प्रार्थना की और वह शांत हो गई।

मप्र से ही उन्होंने अद्वैत-सिद्धांत का प्रतिपादन किया। मप्र में ही शिक्षित होकर उन्होंने अपने सिद्धांतों के प्रतिपादन के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष का भ्रमण किया था और पूरे राष्ट्र को आलोकित किया। उनके कारण ही वेदों एवं उपनिषदों की वाणी पूरे भारत में पुनः गूंजी। समाज में नए जीवन का संचार हुआ तथा मप्र में एक अभिनव युग का सूत्रपात हुआ। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक उनकी सांस्कृतिक एकता यात्रा का मध्य-बिन्दु स्वाभाविक रूप से मप्र रहा है और संभवतः यह उन्हीं के संस्कारों का परिणाम है कि आज भी मप्र में अतिवादी आग्रह नहीं है, न धर्म का, न जाति और न ही संप्रदाय का। आदि शंकराचार्य मात्र 32 वर्ष की आयु में ऐसा कार्य कर गए, जिनके लिए हमारी कई पीढ़ियां आभारी रहेंगी। त्रेता युग में भगवान राम ने उत्तर-दक्षिण, द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने पूर्व-पश्चिम को जोड़ा था। कलयुग में यह जिम्मेदारी आचार्य शंकर के ऊपर आ गई। आदि गुरु शंकराचार्य महाराज ने पूरे देश को सांस्कृतिक रूप से जोड़ा। उन्होंने भारत में चारों दिशाओं में चार मठ बनाकर राष्ट्र को एकसूत्र में बांधने का कार्य किया। आज हम रामेश्वर में जल भरकर जाते हैं और बद्रीनाथ में चढ़ाते हैं, फिर बद्रीनाथ में पूजा करके दक्षिण में ब्राह्मण पूजा करते हैं। चारों पीठ में इनकी पूजा का विधान है। इसके पीछे यही सोच है कि भारत एक मजबूत राष्ट्र बने। आचार्य शंकर ने हमारे देश में सांस्कृतिक एकता की जो मजबूत नींव रखी थी, उसी के कारण आज हम यह कह पाते हैं कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

आज दुनिया में शाँति भंग हो रही है। लोग भाषा, जाति, धर्म, रंग, देश आदि कई आधारों पर बंट रहे हैं। दूसरे का अस्तित्व कहां है, यही सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है, जिसके कारण भारतवासी हजारों साल से यह मानते आए है कि अयं निजः परो वेत्ति गणना लघु चेतसां, उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम। हम कहते है कि धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सदभावना हो, विश्व का कल्याण हो। ऐसा हम सभी सोचते हैं। सारी दुनिया एक है, जो एक परिवार के रूप में है। यह धरती किसी एक की सम्पत्ति नहीं है। यह धरती इंसानों, पशुओं कीट पतंगों, सबके लिये है।

आचार्य शंकराचार्य के दर्शन ने भारतीय समाज में इन्हीं जड़ों को मजबूत किया। शंकराचार्य के दर्शन में हम सगुण तथा निर्गुण ब्रह्म दोनों का दर्शन कर सकते हैं। तत्वमसि तुम ही ब्रह्म हो, अहं ब्रह्मास्मि मैं ही ब्रह्म हूं, अयामात्मा ब्रह्म, यह आत्मा ही ब्रह्म है। इन वाक्यों के द्वारा इस जीवात्मा को निराकार ब्रह्म से अभिन्न स्थापित करने का प्रयत्न शंकराचार्य जी ने किया। हमने निर्णय लिया है कि मप्र में आदि शंकराचार्य के पाठ शिक्षा की पुस्तकों में जोड़े जाएंगे, उनका प्रकटोत्सव मनाया जाएगा। ओंकारेश्वर में शंकर संग्रहालय, वेदांत प्रतिष्ठान और शंकराचार्य की बहुधातु मूर्ति स्थापित की जाएगी। मूर्ति के लिए प्रदेशभर से धातु संग्रह अभियान चलाकर प्रदेशवासियों को इससे जोड़ा जाएगा। आइए हम सभी संकल्प लें कि हम आदि शंकराचार्य के प्रति मप्र की ओर से अपनी कृतज्ञता की अभिव्यक्ति करेंगे।

(ब्लॉगर मप्र के मुख्यमंत्री हैं)